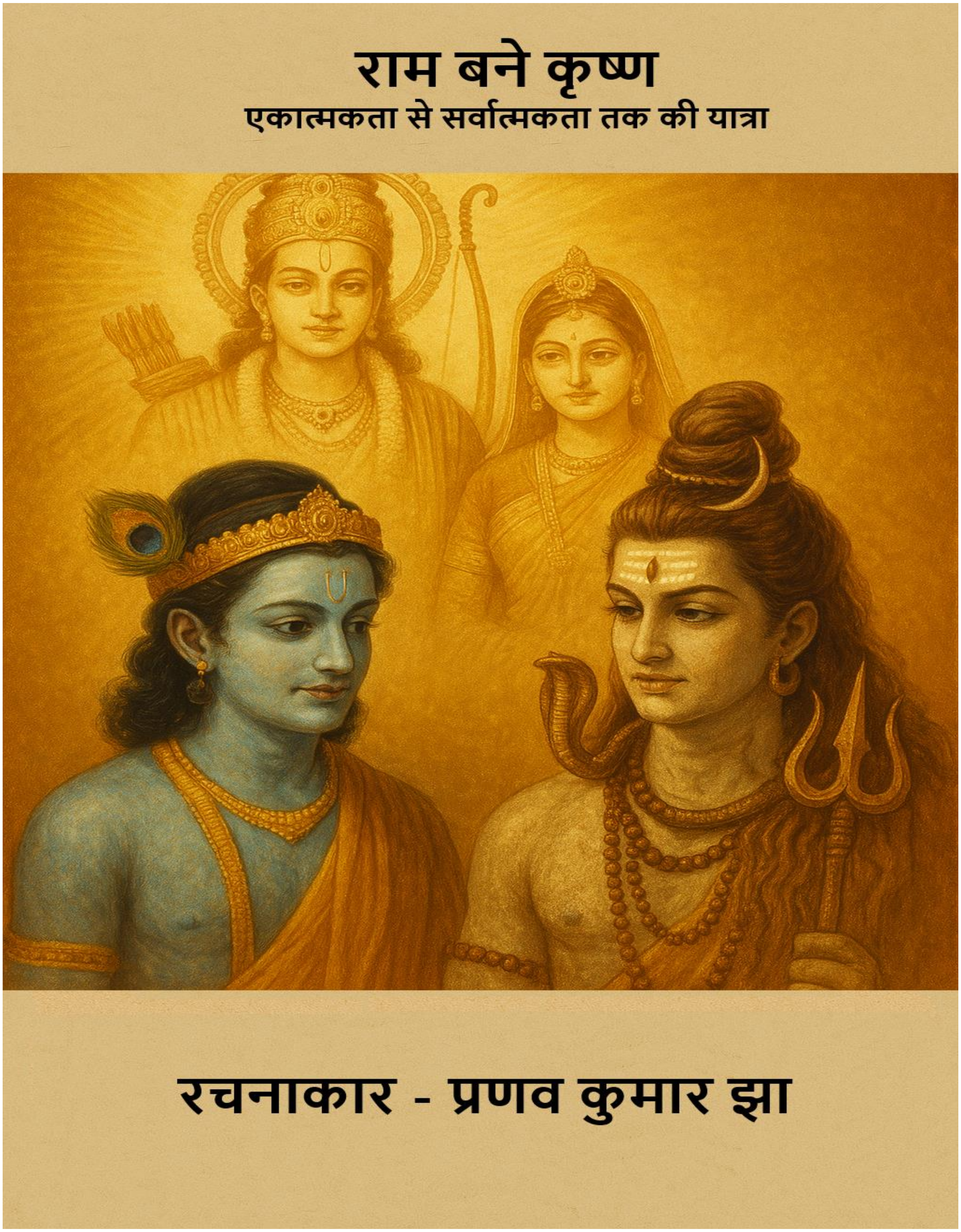
राम बने कृष्ण
एकात्मकता से सर्वात्मकता तक की यात्रा
रचनाकार - प्रणव कुमार झा

समर्पण

यह काव्य मेरे परम पूज्य स्वर्गीय पिताजी, श्री अंबिका प्रसाद झा की पावन स्मृति को सादर समर्पित है।

एक समर्पित शिक्षक के रूप में, आपने न केवल विद्यालयों में ज्ञान का प्रकाश फैलाया, बल्कि मेरे जीवन के भी प्रथम और सर्वश्रेष्ठ गुरु रहे। आपके स्नेहिल मार्गदर्शन और वेदांत, अद्वैत, और कैवल्य के गूढ़ विषयों पर हमारे बीच हुए अनगिनत गहन संवाद इस रचना की आधारशिला हैं। पिताजी, आपकी जिज्ञासा, आपकी विद्वता, और जीवन के रहस्यों को जानने की आपकी अटूट प्यास ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। आपके साथ बिताए वे क्षण, जिनमें हमने आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के अनंत प्रश्नों पर विचार किया, मेरे हृदय में आज भी अमूल्य धरोहर की तरह संचित हैं।

यह खंडकाव्य, "राम बने कृष्ण: एकात्मता से सर्वात्मकता तक की यात्रा", उन्हीं विचारों और प्रेरणाओं का साहित्यिक प्रकटीकरण है जो आपने मुझमें अंकुरित किए थे। क्योंकि राम को राम की कृपा के बिना नहीं जाना जा सकता, और आपकी कृपा राम की ही कृपा का एक रूप है, आपने बचपन से ही राम में मेरी अभिरुचि बढ़ाकर मेरे इस विश्वास को सदैव सबल किया है। आपने ही मुझे शब्दों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने का साहस दिया और वह कला भी सिखाई।

आज जब यह काव्य आकार ले रहा है, आपकी उपस्थिति हर अक्षर में, हर विचार में महसूस होती है। यह कृति न केवल आपके असीम प्रेम और ज्ञान के प्रति मेरी विनम्र श्रद्धांजलि है, बल्कि उन सभी पाठकों के लिए भी एक प्रयास है जो आत्म-अन्वेषण और आध्यात्मिक ज्ञान की राह पर अग्रसर हैं, ठीक उसी तरह जैसे आपने मुझे उस राह पर चलना सिखाया था।

आपकी स्मृति सदैव मेरे साथ है, मेरे हर कार्य को आलोकित करती रहेगी और मुझे जीवन पथ पर अग्रसर करती रहेगी। इस पूरी साहित्यिक यात्रा में आपका आशीर्वाद ही मेरी सबसे बड़ी शक्ति रहा है।

राम रहस्य @ramrahasya.com

खंड 1: एकात्म का परम अनुभव

1.1: राम में आत्मा का रमण

हर आत्मा को इस सृष्टि में
राम से विलग हो आना है,
हर आत्मा को पुनः
राम में ही मिल जाना है।

प्रभु-स्वर कर्णामृत बना,
शिव-हृदय में उतर गया।
मैं तो राम से विलग हुआ,
फिर राम में समा भी गया।
इस अनुभूति ने राम को,
शिव के रोम-रोम में रमा दिया।

1.2: संकल्पहीन वर्तमान और महाकाल का बोध

उस चैतन्य के भीतर
जगी थी एक चाह —
सृष्टि को प्रकट करने की।

उस परम चैतन्य की चाह से
एक दिव्य साकार रूप प्रकट हुआ।

1.3: संकल्पहीन वर्तमान और महाकाल का बोध

"मेरी यात्रा पूरी हुई,"
इस सोच से निश्चिंत शिव,
राम में सहज रम गए।
भव के भाव थम गए,

राम रहस्य @RamRahasya.com

श्वासें जैसे रामनाम के
अनाहत नाद में खो गईं।

अब
न वहाँ कोई संकल्प रहा,
न वहाँ कोई विकल्प रहा,
न वहाँ कोई भूत रहा,
न वहाँ कोई भविष्य रहा।

रह गया तो केवल वर्तमान —
स्वयं महाकाल का वर्तमान।
बच गया तो केवल एक अखंड बोध —
"अहं शिवोमारामचंद्रः अस्मि।"

खंड 2: प्रकृति का पुनर्जागरण और सृष्टि का संकल्प

2.1: ज्ञान-शक्ति का संदेश

प्रभु की ज्ञान-शक्ति ने

क्रिया-शक्ति को पुनः जगाया,

और इच्छा-शक्ति तक

अपना संदेश पहुँचाया।

यह जान प्रकृति मुस्कुरा उठी,

प्रभु का संकल्प दोहरा उठी,

इस सृष्टि को आगे बढ़ना होगा।

2.2: शिव का सांसारिक होना

राम के ही आकर्षण के कर्षण से

राम रहस्य @RamRahasya.com

शिव को सांसारिक बनना होगा।

राम में तो सब रमते हैं,

फिर राम के आकर्षण से

शिव सांसारिक कैसे होंगे?

ज्ञान-शक्ति और क्रिया-शक्ति

इस सोच से जितनी जड़ हुई,

इच्छा-शक्ति हो उतनी ही चेतन।

प्रकृति के भृकुटि-कटाक्ष का

एकाग्र हो करने लगी अनुशरण।

2.3: पुरुष और प्रकृति को पृथक करने का विचार

प्रकृति का भृकुटि-कटाक्ष पा,

राम ने कमलनयन खोले,

और मुस्कुराते हुए भगवान्

शिव के हृदय से ही बोले—

"आइए, भगवती सीता!

आप भी आइए!!

शिव में ही हमारा वास है,

आप भी यहीं बस जाइए।"

भगवती सीता मुस्कुरा उठीं—

“मैं तो सदैव आपके हृदय में हूँ,

सीता सदैव राम के हृदय में रहेगी।

पर आज सृष्टि संकल्प के हित,

राम रहस्य @RamRahasya.com

हम दोनों को एक अलग तरह से

अपनी सृष्टि में चलना होगा।

मुझे और आपको भी

एक नया रूप धारण करना होगा। कू

टस्थ आदिपुरुष और आदि प्रकृति

दोनों को अलग-अलग होकर,

भव में अनेक भावों का

आकर्षण जागृत करना होगा।

इसके लिए प्रकृति को अब पुरुष से

पृथक होकर अपनी राह चलना होगा।"

2.4: पुरुष और प्रकृति का पार्थक्य और राधा-कृष्ण का उद्भव

प्रभु की सम्मति मिलते ही,

आदि प्रकृति धीरे-धीरे,

मधुर मुस्कान लिए,

उनके हृदय से

शांत गति से दूर होने लगीं।

प्रभु की दृष्टि, जो अब तक—

(क्योंकि अब यह राम-रूप रहा ही कहाँ)—

गंभीर और स्थिर थी,

अचानक चंचल हो उठी,

चारों दिशाओं में उन्हें खोजने लगी।

स्मृतियों की गूंज भीतर ही दब गई—

राम रहस्य @RamRahasya.com

जहाँ कभी प्रकृति का वास था, वहाँ अब

(राम की ही तरह, अब वे सीता भी कहाँ थीं!)

एक दिव्य विरह का चिरंतन अनुभव था।

वे विशाल कमलनयन, जिनमें

पूर्णकाम और परमविराम बसा था,

अब एक चिरंतन विरह-वेदना का

नया आयाम बन चुका था।

सृष्टि को उसके परम आयाम तक ले जाने हेतु,

राम आधे-आधे हो गए, विभक्त होकर,

सृष्टि के लिए कृष्ण बने,

और कृष्ण के लिए राधा हो गए।

जो कभी एकात्मक थे सीताराम,

अब बने युगलात्मक राधाश्याम,

यही वह शाश्वत प्रेम है, जो है आत्मा का आधार,

जिसमें समाहित है संपूर्ण सृष्टि के होने का सार।

खंड 3: शिव और कृष्ण का संवाद

3.1: कृष्ण और शिव का साक्षात्कार

राधा दूर और दूर होती गईं,

कृष्ण अपनी पीड़ा छिपाकर,

शिव के हृदय से बाहर आए,

और शिव पर अनायास मुस्कुराए।

राम रहस्य @RamRahasya.com

शिव बोल उठे —

“हे प्रभो! हे राम!

आप मेरे हृदय से क्यों निकल आए?”

कृष्ण ने कहा —

“हे शिव! मैं हूँ कृष्ण।

रामस्वरूप ही हूँ, पर कर्म में हूँ भिन्न।

3.2: सृष्टि को आगे बढ़ाने का संकल्प

यह सृष्टि राम में रमती है,

और राम इस सृष्टि में रमे रहते हैं।

पर राम का एक संकल्प है —

इस सृष्टि को आगे बढ़ाने का।

सृष्टि को आगे बढ़ाने हेतु,

भिन्न-भिन्न प्राणियों को

इस लीला-जगत में लाना होगा।

और इस राम-कार्य हेतु,

मुझे उन सबको राम से विलग कर

संसार में उतारना होगा।

इस कार्य को यहीं से आरंभ करना होगा,

मुझे आपसे ही शुरुआत करनी होगी।

मेरे इस प्रयत्न को सफल बनाने हेतु,

आपको सांसारिक बनना होगा।”

राम रहस्य @RamRahasya.com

3.3: शिव की जिज्ञासा और राम का रहस्योद्घाटन

कृष्ण को देख शिव चमत्कृत हैं —
"मैं तो इनमें स्वयं रमा हूँ,
ये तो मुझमें स्वयं बसे हैं।
फिर ये रामस्वरूप कौन-सी शक्ति है
जो मुझे बाहर खींच रही है,
मुझे सांसारिक बनाना चाह रही है?
राम तो स्वयं परमानन्द हैं,
पूर्णकाम और पूर्ण समाधान।
ये भी बिल्कुल वैसे ही हैं,
पर इनकी इन चपल आँखों में
यह कौन-सी खोज दिख रही है?
मुझे यह रहस्य जानना होगा..."
शिव की आँखें मुँद जाती हैं,
राम पुनः हृदय में समाते हैं।
शिव सहसा पूछ बैठते हैं —
"हे प्रभो! यह रहस्य कैसा है?
अन्तरात्मा में बसने वाले आप,
मुझे बाहर क्यों खींच रहे हैं?
यह आपका कैसा रूप है?
यह आपकी कैसी अद्भुत लीला है?
आपने ही तो कहा था प्रभो —
'हर आत्मा को इस सृष्टि में
राम से विलग होकर आना है,
हर आत्मा को पुनः
राम में ही मिल जाना है।'
मैं तो अपनी यात्रा पूर्ण कर चुका,
अन्तरात्मा में आपको पाकर
मैं आपसे एकात्म हो चुका हूँ।
क्या यह मिथ्या है?
क्या यह मेरा भ्रम है?"

राम रहस्य @RamRahasya.com

राम बोले —
"नहीं-नहीं, यह सत्य है।
एकात्मक हैं हम,
बिल्कुल एक जैसे।
इसमें कोई संदेह नहीं।"
शिव बोले —
"फिर मुझसे यह दुराव कैसा?
मुझसे परायेपन का यह व्यवहार कैसा?"
राम उत्तर देते हैं —
"परायापन कहाँ, शिव!
यह एकात्म की ही अगली राह है।
अपने को और अधिक अपना बनाने की चाह है।
आपने मुझे अपने भीतर पहचान लिया —
अब मुझे अपने से बाहर भी पहचानना होगा।"

खंड 4: राम की लीला और शिव की भूमिका

4.1: साकेत में शिव का अनुभव

अब तो शिव-मानस में
एक संसार उतर आया,
देखते ही देखते साकेत का द्वार दृष्टिगोचर हुआ।
पुरी में प्रवेश कर, दोनों महल में पहुँच गए।
जब प्रभु के समीप माता सीता आयीं,
तो शिव के हृदय के परमानन्द के बाँध टूट गए।
करुणा के समुद्र में आप्लावित हो शिव,
मानो स्वयं ही अपना शिवत्व विस्मृत कर बैठे।
इसके सामने कैवल्य का सुख क्या था!
प्रभु-प्रेम में स्वयं को भुला देना,
आत्मबोध से भी अधिक सुखद है।

राम रहस्य @RamRahasya.com

फिर भरत, लक्ष्मण, शत्रुघघ्न —
चारों भाइयों को साथ-साथ देखा,
शिव के आनन्द की नहीं रही कोई सीमा रेखा।
हनुमान को देखकर तो स्वयं को ही भूल बैठे,
और अपनी भक्ति का मूर्त रूप मान बैठे।

4.2: कृष्ण रूप का रहस्य और संसार का विस्तार

तब राम ने शिव को गले लगाया —

"आपके लिए भी कुछ ऐसा ही संकल्प है,

और सांसारिक होना ही एकमात्र विकल्प है।

मेरे कृष्ण-रूप के आकर्षण को अपनाना होगा,

आपको अपना संसार आगे बढ़ाना होगा।

मैं तो सदा आपके हृदय में ही रहूँगा,

पर आपके जो भी अंश संसार में जाएँगे,

अंदर बसे राम को भूल

कृष्ण की माया में पड़ जाएँगे।"

राम रूप में मैं पूर्ण हूँ,

और सदैव सर्वदा एकात्मक हूँ।

इस रूप के जो मेरे भक्त होते हैं,

वे आत्मबोध पाते हैं,

मुझ जैसे हो जाते हैं।

कृष्ण रूप में मैं बँट जाता हूँ,

टुकड़ों-टुकड़ों में हो जाता हूँ।

अपने भक्तों के जैसा बनकर,

मैं स्वयं कृष्ण रूप से उन्हें प्राप्त होता हूँ।

राम रहस्य @RamRahasya.com

राम रूप में मैं एक हूँ,

कृष्ण रूप में मैं अनेक हूँ।

मैं एकात्मक राम,

सर्वात्मक कृष्ण बन जाता हूँ।

4.3: सृष्टि का परम सत्य और भूमिकाओं का विभाजन

आपको सांसारिक बनाकर संसार को बढ़ाना है,

पर वह आधा ही सत्य है।

मुझे पूरा सत्य आपको बताना है।

मेरी सृष्टि के आगे बढ़ाने के संकल्प को पूरा करने हेतु,

आपके हृदय में बसे मेरे राम रूप के हृदय से,

उस रूप के हृदय में बसी प्रकृति निकलकर दूर हो गई।

पुरुष रूप कृष्ण को वहीं छोड़,

प्रकृति रूप राधा चिरंतन रूप से अलग रहने के लिए मजबूर हो गई।

अब आपको सांसारिक बनकर संसार में जाना होगा,

और मेरे कृष्ण रूप के टुकड़ों को मिलाना होगा।

जब सारे टुकड़े पुनः मिल जाएंगे,

तब राधा-कृष्ण पुनः एक होकर,

मेरे राम रूप को पाएंगे।

शिव कहते हैं —

“हे प्रभु, यह सब कहानी आपने स्वयं ही लिख डाली।

फिर यह मेरा और प्रभु कृष्ण का संसार कैसे हुआ?”

राम ने कहा —

राम रहस्य @RamRahasya.com

“आप अपने मानस में मेरी कथा लिखने के लिए स्वतंत्र होंगे।

आपके मानस में लिखी कथा ‘रामायण’ कहलाएगी।

और आपके मानस की कथा के अनुसार कार्य करते हुए,

यह राम हर कल्प में एक बार आपकी सृष्टि में जरूर आएगा।

और सृष्टि के सभी कार्य कृष्ण की इच्छा के अनुरूप होंगे।

कृष्ण हर ब्रह्माण्ड में सभी कारणों के कारण होंगे।

आप महाशिव जिस प्रकार भव के परम स्वरूप हैं,

उसी प्रकार मेरे महाविष्णु रूप में, कृष्ण, भाव के परम स्वरूप होंगे।

पूरा संसार आपका लोक होगा, और कृष्ण के लिए गोलोक होगा।

जब भी किसी नए ब्रह्माण्ड की आपसे उत्पत्ति होगी,

महाविष्णु उसमें विष्णु स्वरूप में व्याप्त होंगे।

सृष्टि के लिए विष्णु से ब्रह्मा उत्पन्न होंगे,

और संहार के कार्य हेतु आप उसमें शिव स्वरूप में प्रवेश करेंगे।”

सब अपनी-अपनी शक्ति को पाएंगे

और आपकी सृष्टि में अपनी-अपनी भूमिका निभाएंगे।

राम रहस्य @RamRahasya.com